॥ ॐ ॥

:: नव्य स्तवन. ::

रचनार:—

शांत मुरती पन्यास श्री चतुरविजयजी महाराजना
शिष्य, मुनि दर्शनविजय.

પ્રસિદ્ધ કરનાર,

શા. ચંદ્રભાણુ ચતુરચંદ ડુંગાજી
(નાણાવાળા)

સંવત ૧૯૮૫. | પ્રત ૧૦૦૦ | વીર સંવત ૨૪૫૫

ભેટ તરીકે.

"लक्ष्मी प्रीन्टींग" प्रेसमां शा. मणीलाले उगरचंदे
छाप्युं. कालुपुर टंकशाल—अमदावाद.

गूजरात विद्यापीठ ग्रंथालय

(गूजराती कॉपीराइट विभाग)

अनुक्रमांक ૧૪૨૪૩ वर्गांक

पुस्तकनुं नाम ભવ્ય સ્તવન

विषय ૮૨૬ : ૪૬૭

नव्य स्तवन

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

(तेरी गलीमे आया, इति रागेन गीयते)

श्रेयः श्रियां निकेतन ? नरदेवपुज्य शालिन् ? सर्वज्ञ नाथ भुवने, जय देव विश्व स्वामिन् ? ॥१॥ आधार भो ? त्रिजगतां, शिवदारसंग कामिन् ? अतिशायि सर्वसंपत् ? जय देव विश्वस्वामिन् ? ॥२॥ कामामयार्तिहरणे, धन्वन्तरे हि नामिन् ? श्रीवीतराग ज्ञानिन् ?, जयदेव विश्व स्वामिन् ? ।३। भविपद्मबोध तरणे ? कृतशर्म भव्य प्राणिन् ? संपूर्ण पुण्य बसते ? जय देव विश्वस्वामिन् ? ॥४॥ हतरागद्वेषवैरिन् ? जितपञ्चकरणवाजिन् ? धुत मोहमल्ल राजिन् ? जय देव विश्वस्वामिन् ॥५॥ देवेन्द्रवंद्य दानिन् ? चित्तेष्टवाल्पशाखिन् ? भवनीरतीरगामिन् ? जय देव विश्व सावमिन् ? ॥६॥ परमेश हे मुनीश्वर ? योगीश धीर ज्ञानिन् ? ज्योतिः स्वरूप भगवन्, जय देव विश्वस्वामिन् ? ॥७॥ गुणरत्नवृन्द जलधे ? संपत्ति-

धान धामिन् ? जगतात मोक्षगामिन् ? जयदेव विश्वस्वा-
मिन् ? ॥८॥ दर्शन विशुद्धि कारिन् गुणपुष्पदान मालिन् ?
भो संयमीश राजन् ? जय देव विश्वस्वामिन् ? ॥९॥

श्री ऋषभदेव भगवाननुं स्तवन्

(अजित जिणंदशु प्रीतडो. ए देशी)

प्रथम प्रभुना पद पूजिये, जेना गुण छे हो रवि करता
अपूर्व; रवि अंधारूं बहारनुं, हरनारो हो उगे निशदिन पूर्व.
प्रथम०॥१॥ अंतर तिमिर निवारवा, समरथ प्रभु हो, छे नित
त्रण कालः उदय वहे अविचलपणे, नवि थाय हो जेनो अस्त
कोइ काल. प्रथम० ॥२॥ कुवलयने जे आनंद दे वलि कौ-
शिक हो; जेने हरखे जोय, चतुर चकोरना चित्तमां: चतुराइ
हो रेडे हरखित होय. प्रथम० ॥३॥ भीति नथी जेने राहुनी
वलि वादल हो नावे एके पास, लागे शराप न कोइनुं; निज-
गुणमां हो रहे करता विलास. ॥४॥ तपथी तपावे न प्राणिने,
रहे करता हो संतापनो शोष; शांत सुधारस जे झरे, वली करे
छे हो संवरनो पोष प्रथम०॥५॥ क्रूर स्वभाव न जेहमां, साम्य
भावे हो जे रहे छे पवित्रः शुक्रथी राखे प्रीतडी, दोषाकरनो

हो नथी जे वली मित्र. प्रथम० ॥६॥ महान प्रभाव छे जेहनुं, सुखकारि हो सूरजथी विशेषः बालक चतुर विजय तणो, वंदे दर्शन हो ते विभुने हमेश. प्रथम० ॥७॥

श्री अजित नाथ भगवाननुं स्तवन

(ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे, ए देशी)

अजित जिनेश्वर साहेब सांभळोरे, अरज सेवकनी एकः अंतर अरीथी आप अजीत छोरे, हुं तेथी जित छुं छेक. अ० ॥१॥ मोहना मदने उतार्यो छे तमेरे, मदथी घेरायो हुं पूर्णः मिथ्यात्व पाटो चीरी फेंकीयोरे, तेथी छवायो छुं संपूर्ण. अ०॥२॥ तुज दर्शनमां विघन नडे घणुंरे, कांइ न मोडनहार, ते अंतराय निवारे तुम तणीरे, करुणा अपरंपार. अ० ॥३॥ तुज दर्शननी छे चाहना घणीरे, सेवकने हरनीशः प्रेमथी जो प्रगटे भक्ती मुदारे, तो मले झट जगदीश. अ० ॥४॥ क्षपकनि श्रेणि उपर चडता थकांरे आवे भवनो अंतः दर्शन अजित प्रभुनु पामियेरे, वळि लहिये सौख्य अनंत. ॥५॥

श्री अजित जिननु स्तवन

(ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे)

अजित प्रभुजी चन्द्र अपूर्व छोरे,चन्द्रथी चडता छो आप; चन्द्र तो क्षणक्षण चूके मार्गनेरे आपे कर्यो स्थिर माग. अ० ॥१॥ दूधथी धोली कला छे आपनीरे, गणता न आवे पार; अनंत कालथी जेह अखंड छे रे,पामे न कदिये विकार. अ० ॥२॥ तमने निहाली राहु सौम्य बने रे, दाबे न द्योत लगार, उदय तमारो छे वळी शास्वतो रे, अस्त न थाये कोइ वार; अ०॥३॥ परम प्रतापे आपे प्राणीनीरे, जडतानो कीधो नाश; सौम्य स्वभावे दीधो स्नेहथीरे, कमला करमां उल्लास. अ०॥४॥ दोषासक्त नथी तुज आत्मारे, वळी छे कलंकथी रहित, प्रबोध बुधने बहु दीधो तमेरे, पूर्ण धरी चित्त हीत, अ०॥५॥ चतुरविजयनो दर्शन इम भणेरे तुज महिमा छे अतुल्य; छाया तमारी सेवकने सदारे करीदे छे निज तुल्य. अ०॥६॥

श्री संभव नाथनु स्तवन

(प्रथम जिनेश्वर प्रणमिये ए देशी)

संभव स्वामीने सेविये जे शिव सुख दे अगाध, निरमल चित्तथी पापनी माफी जो मांगीये; माफ करे अपराध. स०॥१॥ सुंदर इन्द्रनी उपमा ओपे जेने श्रीकार, महान अनंत पद मांहे रहे नित म्हालता; न करे बीजे प्रचार. सं०॥२॥ मुक्ती शचीना जे कंत छे जयंतना प्रतिपाल, सेवे विबुध सुर पाय सदा जेहना मली; पूजे वली त्रण काल,॥३॥ ज्ञान विमानमां बेसिने निरखे विश्व स्वरुप, वली जे विवेकना वज्रथी विघनना डुंगरा, छेदिने पाडे कूप; सं० ॥४॥ रूप अनूप वपुतणु जोता आवे आनंद, चतुरनो बाल कहे भवि पूजो प्रेमथी; जिनेन्द्रना पद अरविंद. सं ॥५॥

श्री अभिनंदनस्वामीनुं स्तवन

(बालपणे आपण सस्नेही, रमता नवनव वेशे)

सुरनर भूपथी सेवित स्वामी मुक्ती पुरीना वासी, निज षट खंड जे आराधी बेठा, पूरण कीधी आशी, ओ भविया अभिनंदन चक्रीने पूजो ॥१॥ चारित्र चक्र रतन लइ करमां,

सेना सजाइ सारी, समता असिने हसि कसी बांधी, गुण गज करी अस्वारी. ओ० ॥२॥ मद अरीना मदने खंडनारो, दमन रूपी दंड लीधो, सम्यक्त सेनापतिने जोडे, मोढा आगल कीधो. ओभविया ॥३॥ मोह महीशना राज्यनी उपर, कीधी चडती चडाइ, रागने द्वेष प्रबल योद्धाने, मार्यो करीने लडाइ. ओ० ॥४॥ संतोष पुल वार्धिकथी बंधाव्यो तृष्णा नदीने उलंध्या लेश्या गुफाने उघाडी आगाडी, मोह म्लेच्छने बांध्या ओ० ॥५॥ ज्ञान मणीना प्रतापे कीधुं, अजवालुं घटघटमां, दर्शन कहे प्रभु चक्रवरती, गादी बेठा झटपटमां. ओ० ॥६॥

श्री सुमती नाथनुं स्तवन

(जगजीवन जगवालहो मरुदेवीना नंदलालरे)

सुमती जिणंद मुज दिल वस्या, नारायण जिम लोक लालरे; उपमा वासु देवनी, देता टले छे शोक लालरे. सु० ॥१॥ त्रिपदी पामी ज्ञानथी, त्रिभुवनमां थया व्याप्त लालरे; अनंत पदमां महालता, मुनि जनमां जे आप्त लालरे सु० ॥२॥ सारंग धर्मना अधिपति, विरती कौमुदीना इश लालरे; मदन रूपी मुरने मारवा, सज्ज रहे छे निशदिश लालरे. ॥३॥ परम सुदर्शन

चक्रथी, करे वश विषय विशेष लालरे; मरण जरासंग मारीने, जइ बस्या जे निज देश लालरे. सु०॥४॥आतम लक्ष्मीना पति, पुरुषमो उत्तम जेह लालरे: दर्शन कहे भव दुःख हरे, प्रभु पुरुषोत्तम तेह लालरे. सु० ॥५॥

श्री पद्मप्रभुनुं स्तवन

माता मरुदेवीना नंद ए देशी

पूजो पद्म प्रभु भगवान सुरगिरिनी जिम स्थिरछे अविचल माया जेनीजी, महान क्षमाधर स्थिरताना घर भुभृतमां सरदार, उंचा गोत्रतणा जे स्वामी, नमिये वार हजार. पूजो पद्म० ॥१॥ प्रदक्षिणा दे छे सुरराजा हरनिश वारंवार, विविध महीधर चरण वसे छे करवा सफल अवतार. पूजो० ॥२॥ जेना आनंद नंदन वनमां सुरवृन्द लहे आनंद, अन्य सकल प्रतिबंध तजीने पूजे पद अरविंद. पूजो० ॥३॥ प्रशम स्वरूपी कल्प तरुनी भूमी सरल विशाल,शांत सुधारस वावनी अवनी, संवेग भद्रशाल. पूजो०॥४॥ पांच वरणा छे ज्ञानमणी ज्यां,वली कल्याणनी खाण; छाया दर्शनने सुख आपे, सेवा करे कल्याण. पूजो० ॥५॥

श्री सुपार्श्व नाथ भगवाननुं स्तवन

(प्रितलडी बंधाणीरे अजितजिणंदशुं ए देशी)

महारे मनसाचारे ते महादेव छेरे, नाम सुपारसनाथ महासुख दाय जो, हृदयमां ध्यावुंरे ते भोलानाथनेरे, गावुं गुणगण ज्ञान घंटडी बजाय जो. महा० ॥१॥ सुख करनारारे शंकर छे खरारे, देवमां मोटा तेथी कहुं महादेव जो, वली महाइश्वररे तेथी महेश्वरु, निशदिन सारूं प्रेमथी सारी सेव जो, म०॥२॥सहज समाधि हिमाचल उपर जे वसे, समता शांती गंगा गोरी साथजो; ध्यान चक्षुनीरे अगनीनी अंदरे, मदनना मदने बाले पकडीने हाथ जो.म०॥३॥चक्रीने वलिराजा सेवे शरीरने; अतुल विभूती दिशे छे कोइ भात जो; धर्मवृषभ नव छोडे जेना संगने, त्रिभुवन स्वामी गणपतिना छे तात जो.म०॥४॥ भवतणी मालारे जेहना शरापथी, करमाइने पडी गइ नीचे आप जो; वे शिव शंभुरे जिनवर इशने, नमतां नाशे दर्शनना सवि पाप जो. महारे०॥५॥

श्री चन्द्रप्रभुनुं स्तवन

(संभव जिनवर वीनंती अवधारो गुण ज्ञातारे)

चन्द्र प्रभु जिनचन्द्रमा, ब्रह्मा स्वरुप विख्यातारे, धर्म विधीना विधानथी जगमां कहवाये वीधातारे. चन्द्रप्रभु०॥१॥ समवसरणनी भूमीमां, देशना चौमुखे दीधीरे; तेथी चतुर्मुख नामनी, पदवी अनोपम लीधीरे. चन्द्र प्रभु० ॥२॥ संसार कृष्णनी नाभीमां, कमलथी जन्म धरीनेरे; संभोग जड पंक छोडीने, निरलेप बेठा चडीनेरे. चंन्द्र प्रभु० ॥३॥ सरस्वतीने उपजावीने, जगमां कर्यो उपकाररे; अजपितामह ने प्रजापती, नाम वहे छे उदाररे. चंन्द्र प्रभु० ॥४॥ जगत अनंतात्मा कहे, ज्ञान स्वरुपे समजीरे सृष्टा कहवाय छे विश्वमां, तीर्थनी सृष्टी सरजीरे. चन्द्र प्रभु० ॥५॥ ब्रह्मसुधामां लीन छे, जिनवर ब्रह्मा ते जाणोरे; चतुर विजय पन्यासनो दर्शन कहे चित आणोरे. चन्द्र प्रभु० ॥६॥

श्री सुविधी नाथनुं स्तवन

(अभिनंदन जिन दर्शन तरशीये ए देशी)

सुविधी नाथे परम कृपा करी, सफल थइ अभिलाषरे,

जलधर पेरेरे दइने देशना, लाव्या दिलमां उल्लासरे, सुविधी नाथेरे परम किरपाकरी, ए आंकणी. ॥१॥ पातक रुपीरे रज उडती मटी, वही वैराग्यनी धाररे, निवृत थइ गइ गरमी कषायनी; उपशम रसनो प्रचाररे. ॥२॥ रीस जवासोरे बलीने भस्म थयो, नजरे न आवे लगार; प्रशम क्यारीरे खीली माहरी, सुमनस खील्या अपार. ॥३॥ नाचे रंगेरे मनडुं मोरलुं, चातक चितने उमंग; मन्मथ अष्टापद सुणी गर्जना. शिर फोडी हुवो अनंग. ॥४॥ रसथो भीनोरे आशय माहरो, फलियो आत्म आराम; कारज सीधारे सघला दासना, प्रभुदर्शनथी उदाम. ॥५॥

श्री शीतल नाथ भगवाननुं स्तवन

(दीठी हो प्रभु दीठी जगगुरु तुज ए देशी)

जोइ हो प्रभु जोइ तमारी आज, नयने हो प्रभु नयने बहु गंभीरताजी; सागर हो विभु सागर मन जडभाव, राखे हो विभु राखे तजीने धीरताजी ॥१॥ इर्षा हो विभु इर्षा आणीचित्त, तेथी हो विभु तेथी थयो खारो घणोजी: उत्तम हो विभु उत्तम तारी पास, रतनो हो विभु रतनो जोइ कइ गणाजी.

॥२॥मानुं हो विभु मानुं धरीने खेद,वर्षाले हो विभु वर्षा ले थाये दुरमणोजी,निरमल हो विभु निरमल उपशम रस,देखी हो विभु देखी तुज सोहामणोजी॥३॥मानुंहो विभु मानुं अंतरमांह, वडवा हो विभु वडवानलथी बले घणोजी; मुखमां हो विभु मुखमां सुधा भरपूर, तारी हो विभु तारी पेखीने वलीजी. ॥४॥ उरमां हो विभु उरमां भर्यो छे जरूर.झेरज हो विभु झेर अदेखाइ कलीजी; सागर हो विभु सागरथी छे अधीक,तारा हो विभु तारा गुणगण अति घणाजी. ॥५॥ दर्शन हो विभु दर्शन गाये रोज,इणविध हो विभु इणविध गुण शीतल तणाजी.॥६॥

श्री श्रेयांस नाथनुं स्तवन

(सुमतिनाथ गुणशुं मीलीजी ए देशी)

धन दिन महारे आजनोजी. मलीया छे नाथ श्रेयांस; विष्णुनृप कुल कमलमांजी, शुकल पक्षी महा हंस; सो पूजो अेहना चरण सरोज विशाल.॥१॥ क्षीर नीर ज्युं साथ मलेला, जीवने करम अे दोय. विवेक रुपो चांचथीजी. जुदा जुदा करे छे जोय. सो० ॥२॥ ब्राह्यतर छे निरमलाजी दोष न दीशे लगार; झीले मन मानस विषेजी, करे मुक्ताफलथी

प्यार. सौ० ॥३॥ मंगलरुप देदार छेजी, निरखता जाये छे पाप, मुक्तादाम गले धरेजी, शोभा छे जेनी अमाप, सौ० ॥४॥ हिंसाथी दूरे रहेजी, प्राणीना छे प्रतिपाल; एवा जिनवर हंसनेजी, दर्शन वंदे त्रण काल. सौ० ॥५॥

श्री वासुपुज्य भगवाननुं स्तवन

(श्रीसुपास जिनवंदीये सुख संपतिने हेत ललना)

श्रीवासुपुज्य जिन पूजिये, सुरमणी सम जेनुं नाम ललना; दारिद्रनो चूरो करे, पूरे छे काम तमाम ललना. श्रीवासु० ॥१॥ दिशे छे अलोकिक विमलता, मल न मले ज्यां लगार ललना; विमल बनावे सेवक भणी, दिलने बनावे उदार ललना. श्री वासु० ॥२॥ लघुमां गुरुकिम रहीशके? शंका रहे ए उचित ललना; पण जिननाम चिंतामणी, गुरु छतां रहे लघु चीत ललना. श्रीवासु० ॥३॥ पूज्याविणा आपे इष्टने, स्मरण मात्रथी रोज ललना; आवे न नीचना हाथमां, जाणे न जंगली रोझ ललना. श्री बासु० ॥४॥ जिनरत्न चिंता रत्नथी, चिंता टले छे दूर ललना, दर्शन चिंता चूरवा, आवे छे प्रभुनी हजूर, ललना. श्री वासु० ॥५॥

श्री विमल नाथनुं स्तवन

(श्री सुपास जिनराज तुं त्रिभुवन शिरताज, ए देशी)

विमल प्रभुजीना पाय, पारसमणी ज्युं सुहाय; आज हो आवुंरे प्रभु सेववा तारा चरणनेजो.॥१॥ मुज आत्मा छे लोह, तेनो करीने विछोह; आजहो शुद्ध ते बनावी आपो सुवर्णनेजी ॥२॥ सरस सुवालुं देखाय, करकषता न जणाय; आज हो रंजेरे उमंगे अढारे वर्णनेजी. ॥३॥ पद पारसपाषाण सौनुं करे छे कल्याण, आज हो सुणतारे करे छे पावन कर्णनेजी. ॥४॥ मणी करे हेम अमुल्य चरणतो करे निज तुल्य;आज हो एजरे विशेष कहु दर्शनेजी. ॥५॥

श्री अनंत नाथनुं स्तवन

(श्रीश्रयांसजिन अंतरयामी ए देशी)

श्री अनंत प्रभु अंतर्यामि अनंत गुणना धामीरे, सेवक जननी वांच्छा पूरे, सुरतरु उपमा पामीरे. श्री अनंत० ॥१॥ कायानी छाया छे जेनी संतापनी हरनारीरे, भवना तापथी तपेला प्राणी, सेवे सदा सुखकारीरे. श्री०॥२॥ भुखना दुखथी पिडाता प्राणी,फलमांगे जइ पासे; भूख भगाडे भवो भव केरी तृप्त करीदे उल्लासेरे. श्री० ॥३॥ सुरवर नरवर भुवनपती जे,

अमृत फलना आशीरे; छेडो न छोडे जेनो जरिये, नित्य रहे छे पासीरे. श्री० ॥४॥ एवा प्रभुना चरण कल्पमां, चालो सखी जइ वसियेरे; दर्शन विजय कहे अंतरना ताप निवारी हसियेरे. श्री० ॥५॥

श्री धर्म नाथनुं स्तवन

(श्रीश्रेयांस कृपा करो. ए देशी)

धर्म प्रभुना छे गुणघणा, चंदन तरूजिम शीत, अंतर ग्रीषमता हरे, चित्तने करे शांत नीत; धर्म विभुने ध्याविये. अे आंकणी. ॥१॥ सुरपतीनी अप्सरा तणा, नयन रुपी शिली मुख, गुणगन्धगां लपटाइने, पामे छे महा सुख. धर्म विभुने० ॥२॥ भक्त भुजंग भजे मुदा, करीने वली प्रतिबंध; असुर कुहाडो छेदे जो, बंने दे छे आनंद. धर्म विभु० ॥३॥ यश परिमलनी लहेरमां, जगत थयुं छे आधीन; शमरसमां धरे लीनता, जलमां जिम वसे मीन. धर्म विभुने० ॥४॥ ध्यान मलयाचलमां रहे, राखे वैराग्य रंग; वाता मलयनो वायरो चंचल थाये न अंग. धर्म विभुने० ॥५॥ मूलव्याप्या बधा विश्वमां, स्कंध लोकनी अग्र; शाखा प्रशाखा घट रही, जुवे जोगी समग्र. धर्म विभुने० ॥६॥

श्री शांती नाथनुं स्तवन

(सिद्धाचल गीरी भेटयारे धन भाग्य अमारा)

चिरकाल विश्वमां जीवोरे, शांतीनाथजी दीवो. ए आंकणी,
त्रिभुवनने समकाले विकाशे, विकसे छे सादी अनंता; सूक्ष्म
भाव जगतना बतावे अंतर तमना छे हंतारे. शान्ती० ॥१॥
काम धुंवाडाथी रहितछे. पोते दुरित दीवटने दहे छे; बाले
वली जे स्नेह दशाने निरमल अंग वहे छेरे. शां० ॥२॥
महागुणवान छतां नहो दीवट, अघनो चीकट नव लागे; परम
अनुपम रुप निहाली, पाप पतंग तो भागेरे. शान्ती० ॥३॥
चौद भुवननी आशाने पूरे चो दिश करे ते अजवालुं; निशदिन
मंदिरमां रहे जगतो, क्यांइन दीशे कालुंरे. शान्ती० ॥४॥
प्रलयना वायुथी पण न ओलवाये, चंचल थाय न कदिये;
चतुरनो दर्शन कहे प्रभु दीवो, मनमंदिरमां धरियेरे. शां० ॥५॥

श्री कुंथु नाथनुं स्तवन.

(तेरी गलीमें आया तेरे जिगरने सताया.)

श्रीकुंथुनाथ स्वामी, तारी दया हुं पामी; थयो छुं परम

विश्रामी, मननी अशांती वामी. श्री० ॥१॥ भक्तीमां विघन आव्या, तुजने बहु भमाव्या आजे ते सौ सिधाया, तेथी तने में ध्याव्या, श्री०॥२॥ नथी कोइ तुंथी मोटो, नथी कोइ हुंथी छोटो; तारो ग्रह्यो में फोटो, हवे आवशे नही टोटो, ॥३॥ ज्यां शोक चित्त थाये, त्यां पाप बहु बंधाये; एवे प्रभु आ न्याये, बीजे न चित्त जाये. ॥४॥ ज्यां याद नाथ आवे, मुजने तिहांज फावे; वनमां तने जो ध्यावे, वन शहेर तुल्य थावे. ॥५॥ कोइ मने जो निंदे, अथवा भले जो वंदे, परवाह नथी मने ते, इक तुं मने गमे छे. ॥६॥ ध्याता तने जो चूकुं, ते स्थानमां हु थुकुं; तुजने जे स्थाने रोकुं, ते स्थानने न मूकुं. ॥७॥ तारी स्तूती करंता, आवो न विघन फरता; रहो नाथ विघ्न हरता, दर्शन कहे स्मरतां. ॥८॥

श्री अर नाथनुं स्तवन.

(वीरकुंवरनी वातडी कोने कहिये, ए देशी)

अर जिनवरना चरणने सखी अरचो, हांरे तनमननी मूडीने खर्चा, हांरे रूडा गुण ग्रही मुखथी चरचो, हांरे जे छे हंस समान, अरजिनवरना० ॥१॥ बाह्यांतर छे उज्वली जेनी किरती, हांरे वसे गाम नगरमां फरती, हांरे राजहंसना मनने

हरती, हांरे सोहे अंगे अपार; अर० ॥२॥ निरमळ मानसमां सदा जो वहिये, हांरे विश्वमां बहु शोभा लहिये; हांरे रूप देखीने दिल गह गहिये, हांरे हर्ष थाय अपार. अर० ॥३॥ पक्षमां भव्य प्राणीने लइ उडे छे, हांरे जे अमरपुरमां जइ चडे छे, हांरे मुक्ताफल जेनी पासे जडे छे, हांरे काढे दारिद्र दूर. अर० ॥४॥ आ प्रभु हंसने होंसथी भवि सेवो, हांरे लावी आपे छे अमृत मेवो; हांरे जेने ध्यावे छे सुर नरदेवो, हांरे दर्शन कहे रोज. ॥अर० ॥५॥

श्री मल्लीनाथनुं स्तवन.

(मारूं मन मोह्युंरे श्रीसिद्धाचलेरे. ए देशी)

मल्ली जिनस्वामी रे प्रभु ओगणीशमां रे कुंभ नरपतिना जात, प्रीतथी पूजोरे भवि तमे एहने रे, समरो वलि दिनरात, मल्ली० ॥१॥ जेहनी वाणीरे सुरनदी सारखी रे,हरे छे कलि-मल मेल,रस भर वहेती रे रहेती विश्वमां, फलाती रेलम छेल. म० ॥२॥ तृष्णा आतापरे पापने टालती,गालती रूदय जमीन, राजहंस केरीरे आशा पूरतीरे, सुरजन करती आधीन. ॥३॥ स्फटिक समान छे पदपंक्ती जिहांरे, आशय महागंभीर; जे-हना निरमळ रसमां पखालतांरे, शुद्ध थाय समकीत चीर.॥४॥

संवर देतीरे आश्रव वारतीरे, कदिये न पामे शोष, कषाय अनलने वेगे शमावतीरे, खीलवती उपशम कोश. ॥५॥ एवी जिन वाणीरे गंगामां जइरे, झीलीये प्रेमथी आज, चतुर विजयनो दर्शन कहे मुदारे, सरशे सकल मुज काज. मल्लीजिन स्वामीरे० ॥६॥

श्री मुनिसुव्रत स्वामीनुं स्तवन

(सुण दयानिधी तुज पदपकंज मुजमनमधुकर लीनो.)

अहो जिनवरजी वहान समान छे चरण तमारा मनहरू हुं तों वली वली तारी सेवा करूं. अहोजिन० ॥ आ अपार संसार महा दरियो, छे दुःख खाराजळथी भरियो; तुं एक पळकमां ते तरियो अहो जिनवर० ॥१॥ तेमां तो हुं बहु डूब्यो छुं, मद मगरना मुंहमां पडियो छुं, कषाय वडवाथी बळियो छुं, अहो जिनवर०॥२॥ तारा चरण जहाजमां जो-बेसुं, तो भवजल तरी झट तट वसु; शिवनगरीमां जइने पेसुं, अहो जिनवर० ॥३॥ मने ध्यान तमारूं प्यारूं छे, भवि जीवने सुख करनारूं छे; तेमां इक लक्ष्यज मारूं छे. अहो जिनवर जी० ॥४॥ जो तुज करूणानी लहेर वधे, तो मुज चित्तमां सुख थाय बधे, दम चतुर विजयनो बाळ वदे. अहो जिनवर० ॥५॥

श्री नमि नाथनुं स्तवन

(सिद्ध चक्रवर सेवा कीजे. ए देशी)

नमि प्रभुनी वाणी सुधारस, श्रवण सुवर्ग कचोलीथीजी प्रेमधरीने पीओ प्राणी, मोठी अमृत गोलीथी, भविजन पीवो जी, अमरबनो तत्काल, बहुचिर जीवोजी. ॥१॥ निरमल ज्ञान रतनथी भरेला जिनरूप रतना करथीजी निकलेली सुर-जनने वहाली, जेहने चाहे छे अरथी. ॥२॥ संसाररूपी दावानलनी, शांती करे छे हेतेजी, भवो भवकेरी पिपासा मिटावे, अंतर ताप समेते. भवि० ॥३॥ नयगम आगम हेतु दृष्टांते, स्याद्वादरसथी भरेलीजी; स्वर्ग पाताल न मृत्युलोके त्रिभुवनमां विचरेली. भवि० ॥४॥ जे भवि भावे भरी पीये, भूख तृषा तस जायेजी; शिवपुरीनो राजा थइ बेसे, चतुर दर्शन इम गाये. भवि० ॥५॥

श्री नेमी नाथनुं स्तवन.

(देवयशा दर्शन करो, विघटे मोह विभाव लालरे.)

नेमि जिनेश्वर साहेबा, आप विमान समान लालरे; अनंतपदमां छो महालता, पाम्या छो अमर मकान लालरे॥१॥

विचरो छो ज्ञान चरण थकी, स्वर्ग मृत्यु पाताल लालरे; अविचल लीला छे ताहरी, जुवे छे बाल गोपाल लालरे ॥२॥ प्रतिकुल लागे न वायरो, कुपथ नही संचार लालरे; पहोचावो छो धार्या स्थानमां, जात न लागे वार लालरे. ॥३॥ उंचामां उंचा धाममां, आप बले चडनार लालरे; दीनपणे वली कोइनी, करता नथी परवाह लालरे० ॥४॥ तुजपद पद्मनी चाकरी, पामे कोइ पुन्य वान लालरे, चतुरविजयनो किंकरू, दर्शन धरे नित्य ध्यान लालरे. ॥५॥

श्री पार्श्व नाथनुं स्तवन.

(परमातम परमेश्वरू जगदीश्वर जिनराज ए देशी)

पारसनाथने पूजीये, झूजीये कर्मनी साथ, पुज्य थइये जगमांहे, लहीये निजराज्यने, तरिये संसार पाथ. ॥१॥ गाय समान छे जेहनी, वाणी नित हितकार, विश्वस्वरूप विशाल गोचरमां विचरती चरतीशस्य विचार. ॥२॥ नजर न देखे जेहने, क्रूरकुतर्क मृगेश; वली न फसाये कु युक्ती स्वरूपी पासमां, निरबंध रहे छे हमेश. ॥३॥ खलने कही निज अंगमां, करे छे मधुर ने स्वेत, सेवकने झटपटमां घट भरी आपती, रसथी दोहता वहेत. ॥४॥ वाणी गोरी गावडी

मंगलरूप देखाय;दर्शन विजय कहे भवि बांधो आंगणे, जो होय अमृतनी चाह. ॥५॥

श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन.

(अंतरयामी सुण अलवेसर महिमा त्रिजग तमारो)

वीर प्रभु श्री चरिम जिनेश्वर, परमेश्वर अति प्यारो, जगत सरोवर मांहे उगेलो महान .कमल छे न्यारो, सौकोइ तेहने सूंघो आज काज सकल भवि सरशे. ॥१॥ कायामां कांटो नथी जेहने, वळी जरी रज न हृदयमां; कायाथी करमाय न कदिये, पलटे न अस्त उदयमां. सौ० ॥२॥ स्थान न चूके लक्ष न मूके, कंपे न वायुना वेगे; लेप लगार न लागे अंगे, विकसित रहे अतिरेके. सौ० ॥३॥ केवल कमला निलय करी ज्यां, वासो वसे छे प्रीते; अविचल छायानुं घर जाणी, शांती वरे भृंग चीते. सौ० ॥४॥ लोक सरोवरना शिर उपर, वास सदा छे जेहनो, पोंखविना कोइ जइ नव पहोचे, पार लहिये किम तेहनो. सौ० ॥५॥ लोकालोक विषे फेलाये, ज्ञान सुगंधी जेहनी; ते प्रभु कमलनुं दर्शन करवा, इच्छा थाय न केहनी. सौ० ॥६॥

શ્રી રૂષભદેવનું સ્તવન.

(લાવ સખી મારૂં મન લલચાણું એદેશી)

રૂષભ પ્રભુ હવે દાસની અરજી,
સાંભલો ધાલુ તમે જિનવરજી.
કરમની કથની કહું વિભુ આગલ,
મનથકી માયા પ્રપંચને વરજી. રૂષભ૦ ૧

રત્નથી મોંઘું નરભવ પામી,
સકલ સમગ્રી પૂરણ સરજી.
પર ઉપકાર કર્યું નહીં એકે,
આજ લગી રહ્યો હું નિજ ગરજી. રૂષભ૦ ૨

મોહ ને દુઃખથી ગ્રહી તુજ દિક્ષા,
શીક્ષા ન લીધી મેં ગુરૂની અગરજી.
દોષ વેતાલીશ માળ્યા વગરની,
ભીક્ષાથી પુરૂં છું હું નિજ ઉરજી. રૂષભ૦ ૩

ધર્મને નામે ઢોંગ ધરીને,
લોકને ઠગ્યા મેં જઈ ઘરો ઘરજી.
પાપતણા ઉપદેશ સુણાવ્યા,
વચન મનાવ્યા મેં પરાણે તરજી. રૂષભ૦ ૪

સિધગીરી સ્વામી સુણુ ગુણુ ધામી,
એવો ઉપાય સરસ કરજી.
દુરગુણુ જાયે ને સદગુણુ આવે,
દર્શન સુધરી જાયે આખરજી. રૂષભ. ૫

અજિત નાથનું સ્તવન.

(નાથ કેસે ગજકો બંધ છોડાવ્યો એદેશી)

અજિત જિન બાલ બોલે તે સુણજો, મારી મોહદશાને હણજો,
અજિત૦ એ આંકણી,

સાધુ બની મેં સાધુતા લીધી, ધારી અસાધુતા અંગે,
સંસાર વધાર્યો વિષયમાં રાચી, રમ્યો સંસારીને સંગે, અ. ૧
હાથમાં માળાને મુંહમા લાળા, એવે ઉખાણે હું ચાલ્યો,
બગલાની પેરે ધ્યાન ધરીને, કઇક ઉપર ઘા ઘાલ્યા, અ૦ ૨
મીઠું મીઠું મોહથી બોલી, ભોલવી જાલમાં નાખ્યા,
સ્વાર્થ સાધી રૂદયના ભાવો, કિંપાક ફલ પેરે દાખ્યા, અ૦ ૩
ધ્યાન ધર્યું વળી લોકને ઠગવા, વૈરાગ્ય જગને બતાવા,
ભાષણ કીધા કિરતી ફેલાવા, પ્રવરતી રાખી ગવાવા. અ૦ ૪
આવી કપટ ક્રિયા પ્રભુ મારી, આગલ તારી મેં ભાખી
દર્શન કહે જો લોક ન દેખે, પણ તુંતો છે સદા સાખી. અ૦ ૫

સંભવ નાથનું સ્તવન.

(શ્રી યુગમંધરને કેહજોરે દધિસુત વિનતડી સુણજી.)

સંભવ નાથ પ્રભુ આગે, દિલની વાત કહું રાગેરે. સંભવનાથ૦
પ્રભુ હું છું એક લઘુ માખી, મુજ જિંદગી નિષ્ફલ ગઇ આખી
મારી ભૂંડીદશા કહું છું ભાખીરે. સંભવનાથ૦ ૧
તારા બાવના ચંદનસમ ગુણમાં, જે મેહકી રહ્યા છે આંગણમાં
તેમાં ન વસી એકે ક્ષણમાં રે. સંભવનાથ૦ (૨)
જે વિષમ છે વિષય શ્લેશમ વલી. જેહમાં છે અતિશય સ્નેહ વળી
તેમાં હું લેપાઇ છું સઘલી રે. સંભવનાથ૦ (૩)
મિચાઇ છે મતી બુધી આંખો, વળી ચોટી છે જ્ઞાન ક્રિયાપાંખો
ચરણાદી અંગ થયો વાંકો રે. સંભવનાથ૦ (૪)
હવે ઉડવાની તો નથી શકતી, મારી કિમ કરી થાશે પ્રભુ ? મુકતી
કયારે પામીશ હું તુજ ભકતી રે. સંભનનાથ૦ (૫)
વલી મૃત્યુ વાઘનો રહે ધોખો, ખાલી કરશે ખાઇ ખોખો,
દર્શનને બચાવો લઇ મોખો રે. સંભવનાથ૦ (૬)

નાટકીય રાગના સ્તવનો

(મને બોલીને ભરમાવીરે કેમ કરૂં. એદેશી)

મને મોહ નડે છે મોટો રે હો નાથ સણો. એ આંકણી,
મારો હાલ થયો છે ખોટો રે હો નાથ સુણો,

લુટનારો જે ધુતારો, લાગે કેડે એ નઠારો,
ખરે ખર લાગે ખારો, ધન હરતો,
છલ કરી છલનારો, મારી મૂડી મોડનારો,
ધાયો ઢુકડો ધુતારો, વન ફરતો.
દે..............ખી...............હું...............તો
થરરરરર.............થરરરરર..........થથર્યો હો નાથ સુણો૦
મને મોહ નડે છે. ૧

પહેલા પોતે પાસે ધાયો, ગાઇ રાગને બોલાવ્યો.
કેડે દ્વેષ દોડી આવ્યો, મને પકડયો
મિથ્યા ભૂમીમાં બેઠાવ્યો, મદ મદિરા પિલાવ્યો,
આંખે પાટો તે બંધાવ્યો, બહુ જકડયો,
હૈ..............યા..............માં...............તો
અરરરરર...........અરરરરર...........થાય, હે નાથ સુણો૦ ૨

પ્રેમ પલંગ ઢલાવ્યો, આશા શય્યામાં સુવાવ્યો.
પછી પછેડો ઉઢાવ્યો, કરી યુગતી
કાંઈ કામણ કરાવ્યો, હું તો અતિ ગભરાયો.
ઘેરી ઉંઘમાં ઘેરાયો, મારી ચુપકી,
આં..............ખો..............માં..............તો
ઘરરરરર..........ઘરરરરર..........ઉંઘ્યો હે નાથ સુણો૦ ૩

જ્ઞાન ધન બધું લીધું, કાંઇ રહેવા નહીં દીધું.
બધું ખાધું ગુણસીધું, ઝટપટમાં,

કામ કનક મેં પીધું, એવું કુમતીએ કીધું,
જરી જાગવા ન દીધું, ખટપટમાં,
ના...............ઠો...............ત્યાં...............થી,
ખરરરરરર...........ખરરરરરર...........આજ હે નાથ સુણો૦ ૪

મોહ ચોરથી છોડાવો, આંખ પાટાથી બચાવો
કેફ મદનું ઉડાવો મારા જિનજી
જ્ઞાન બ્રહ્મી તો ચખાવો. બુધી બુટીને સુંઘાવો
દર્શન રતન અપાવો ઠારો મનજી
ચા...............શે...............સા...............રી
વહા...............વહા...............જગમાં હે નાથ સુણો.
મને મોહનટે છે મોટો રે હે નાથ૦ ૫

નમીનાથ સ્તવન

(વહાલા વ્રજલાલ સાથે લાગીરે લગનીયા,)

આ....આશું તેં આજ કીધું, કામણુરે કામણીયા સ્વામી નમી નાથ,

કામણુની કોઠી તારી. કાયા દીશે છે અમને;
સૂઝે ન એકે કોઇ કાજ, બહાર ઘરમાં, જ્યાં,ત્યાં જાતાં, આ.... આ૦ ૧

જમણુની વેળા મુજને, જમણુ ન ભાવે જમવું;
તુજ નામ એક આવે યાદ,ભાણે,બ્હેતા,ભોજન જમતા, આ....આ ૨

વણિજની વેલા હુંતો વણજને વિસર્યો પ્રભુજી,
વણજ કરૂં છું ઇકતુજ સાથ. ભાવ વધંતા લેતા દેતા. આ...અ૦ ૩

ઉંઘની વેલા મુજને, ઉંઘ ન આવે સ્વામી,
તારા ગુણ સમરતા વીતે રાત, સૂપનામાં પણ, તુંહિજ તુંહિજ. આ ૪

રાત દિવસ માંહે ઘડી ઘડી પલે પલે,
તુંહીજ વસે છે મારી પાસ;
દર્શન કહે છે, રૂડું કીધું. આ..........આશું તેં૦ ૫

નેમનાથનું સ્તવન

(મણીયમ મંડપ રચીયોરે. સાહેલી સાથ)

ઉગ્રસેનની નંદનીરે રાજે મતી નાર આપને કાંઇ
કહેવા કહે છે સાંભલ નેમ કુમાર,
દેશે મહેણા મોહથી બહુ વાર વાર સાંભલી કાંઇ
રીસ ન ધરશા દિલમાં પણ તલભાર ઉગ્ર સેનની૦ ૧

સાખી

તુમને પરાણે પરણવા, જનકે કરાવ્યું મન,
એ શું હઠ પકડી હતી, માન્યું ન તેહનું વચન,
મન વિણ માન્યું વચનને, આવ્યા વરવા રાજ, આવતા કાંઈ
છીંકયો કોણ તે વલી ગયા વલી પાછાજ. ઉગ્રસેનની ૨

સાખી

બાનું પશુ પોકારનું, પકડયું મોઢું હાથ,
જોઇતું વૈદે બતાવીયું, હૈયડે હરખ્યા નાથ,
શું અવિવેક જણાયો રે ગિરધરના ભ્રાત, આગ્રહી કાંઈ
ઉભા ન રહ્યા સુણવા કોઇની વાત. ઉગ્રસેનની૦ ૩

સાખી

માનીલા જો માનની, મનમાં હતી અભિલાષ,
માન અપાવત તો તને, આ શું ખેડયો સહાસ,
શું તુમ સસરે નાખ્યું રે હય ગય રથ દામ, લોભથી કાંઇ
લોભી થઇને રીસાણા છો આમ. ઉગ્રસેનની૦ ૪

સાખી

પ્રીત પુરાણી પરી હરી, પરિહરી રાજુલનાર,
પરિપૂરણ પ્રગટયો તમે, શિવરમણી પર પ્યાર,
એવી તે કેવી રૂપાળી છે શિવનાર રૂપથી કાંઈ
મુજથી અધિકી જેના થયા ભરતાર, ઉગ્રસેનની૦ ૫

સાખી

સર્જન જે મારગ ગયા, ત્યાગીને વિપરીત,
તેહિજ મારગ ચાલવું, એ છે સર્જનની રીત,
પછતાડે હું આવીશ રે નહીં છોડું છેક છેડલો કાંઇ
છુટશે નહીં જે ટકેલી જુની ટેક, ઉગ્રસેનની૦ ૬

સાખી

દિક્ષા ચો શિક્ષા કરો, ભીક્ષા માંગુ એજ,
કરો પરીક્ષા પ્રેમની, પહેલા બિછાવું સેજ,
રાજુલનારી તારીરે તેં તારી નાથ, તારજે કાંઇ
તિમ ભવ જલથી દર્શનનો ગ્રહી હાથ, ઉગ્રસેનની૦ ૭

પારસનાથનું સ્તવન

(જુઠું જુઠું જગત ખરૂં જાણ્યાં રે)

પૂજો પૂજો પારસ પ્રભુ પ્રેમથીરે, પૂજો પૂજો.
પ્રભુ પ્રેમથી રે, પૂરા નેમથી રે, પૂજો પૂજો૦
પૂજ્યની પૂજા પૂજ્ય બનાવે, જે પ્રભુની કરે પૂજા ભાવે.
પરમાનંદ પદ પાવે છે ઉદ્યમથીરે. પૂજો પૂજો૦ ૧

મિથ્યા વિષથી તરત મુકાવે, સમકીત રૂપી સુધા પિલાવે;
નિર વહેમી બનાવે હઠાવી વહેમથી રે. પૂજો પૂજો૦ ૨

પર પરીણુતીનો નાશ કરે છે, નિજ પરિણુતિને પાસ કરે છે;
જ્ઞાન દશા ઝટ જાગે જેની રહેમથી રે. પૂજો પૂજો૦ ૩
મોહ મહીપતિને હરાવે, રાગ દ્વેષ મહા સુભટ હઠાવે;
સંયમ રાજ્ય અપાવે કુશલ ક્ષેમથી રે. પૂજો પૂજો૦ ૪
મુક્તી મેડીપર ચડવા સીડી, દર્શનની અવિચલ છે પીઢી;
રતનત્રયી એ પામે પ્રાણી એહથી રે. પૂજો પૂજો૦ ૫

મહાવીર સ્વામીનું સ્તવન.

(પ્રીયતમ પ્રભુ નમિયે આપને એ દેશી)

નમો નમો મનથી મહાવીરને, નમો નમો૦
તેજસ્વી ધીર ગંભીરને. નમો નમો૦
તેજથી દીધો રવિને હરાવી, ગગનગ નામે શીરને. નમો નમો૦ ૧
ધૈર્યથી દીધો મેરૂ ચલાવી દાબ્યું અંગુઠે શરિરને. નમો૦ ૨
ગંભીરતાથી સાગર ખળભળ્યો, વહે છે ખારા નીરને. નમો૦ ૩
ભામંડલના પ્રભાવે પભણું, સૂર્યે ગુંપ્યું શરીરને. નમો૦ ૪
સિંહાસન અતિશયથી સમજું, મેરૂએ ઢાકયું શીખરને. નમો૦ ૫
દિવ્ય ધ્વની અચરિજથી માનું ઉદ્ધીએ દીધી સુધારને. નમો૦ ૬
જ્ઞાનને દર્શન ચારિત્ર લેવા, વંદન કરિયે વીરને. નમો નમો૦ ૭

સુમતિનાથનું સ્તવન.

(છનનન નાચું હું ઝુમ ઝુમ તાલ એ દેશી.)

છનનન નાચું છું તારે દુવાર,
સુમતી જિણંદ સુણો વીનવે છે દાસ;

સંસાર મંડપમાં નાટક નાચ્યો,
રાચ્યો હું નારીને વેશ અપાર; છન૦

ભૂપના પાઠ લઇ પાટપર બેઠો,
ઠાઠમાઠ સાથે તે ભજવ્યા શ્રી કાર. છનનન૦ ૧

ભૂપ ટલીને વલી રંક થઇ બેઠો,
પાટથી હેઠ સામે ઉભો દરબાર;
જનક થયો વલી જાયો કહેવાયો,
શેઠ થઇને હેઠ વળી થયો વેઠકાર. છનનન૦ ૨

વેશ વિશેષ હમેષ આ ભજવ્યા,
કરમે જે સોંપ્યા હતા અધિકાર;
પરવશ પડયો પ્રાણી શું નથી કરતો,
પેટને માટે મહાન અનાચાર. છનનન૦ ૩

નકલ કરીને વિભુ નાચ બતાવું;
તું ભવનાટકનો છે અટકાવનાર,
દર્શન કહે છે સુમતિ જિન સ્વામી,
ખામી અમારી આ ટાલ દરબાર. છનનન૦ ૪

અભિનંદન સ્વામીનું સ્તવન.

(તરકારી લેલો આઈ માળણ આ બિકાનેરસે)

અભિનંદન સ્વામી ખામી અમારી તમે ટાલજો,
મન મોહન નામી, શરણે આવ્યાને હવે પાલજો. અ૦

તુમ સરખા જો સાહેબ મલતા; દુખ દારિદ્ર ન જાય,
તુમ સેવક વળી સુખ નવ પામે. તો કોના સેવા પાય રે. અ૦
અમૃતથી જો તૃષા ન જાયે, તો તૃષા હરે કોણ.
ઝાંજવાનું નિત નીર પિવતાં, તૃષ્ણા થઇ ન ન્યૂન રે. અ૦
ચિંતિત દાયક ચિંતામણીથી, ચિંતિત ન દેવાય,
તો શું કાચા કાચને કટકે, સફલ મનોરથ થાય રે. અ૦
ફલિત કલા જો ફલ નવ આપે, તો ફલ કયાંથી પમાય,
બાવલીએ તો કાંટા વાગે, હાથને પગ વિંધાય રે. અ૦
આજથી તુંહીજ લાયક નાયક, દાયક છો મહારાજ,
જો દેશો તો હરખથી લેશું, તુમ હાથે છે લાજ રે. અ૦
અમને તો છે આશા મોટી, છોટી નથી લગાર;
મોટાને છે પૂરી કરતા, કેટલી લાગે વાર રે. અ૦
છોટાનું જે પાલન કરવું, મોટાનું છે કામ.
દર્શન વિજય કહે કરજોડી, પૂરો અમારી હામ રે. અ૦

સંભવનાથનું સ્તવન.

(આવી મુરતી મોહનગારી ચિદાનંદ.)

પામ્યો પરમ કૃપા સંભવની,
મટી પીડ મુજ ભવોભવની;
બંધન ટુટયા, મોહથી છુટયા,

કઠિન કર્મના દલિયા છૂટયા,
શાંતી થઈ ભવ દવની. પામ્યો૦ ૧

ખાણુથી નિકલ્યા જાણુમાં આવ્યા.
પાપ લેપથી નંહી લેપાયા.
રોકી નીક આશ્રવની. પામ્યો૦ ૨

સંવર સંગ્રહ્યો નિજમન નિગ્રહ્યો,
ઘાત અઘાતથી નિજ ધન ઉગર્યો,
પામ્યા મહા પદ અવની. પામ્યો૦ ૩

ખજાનો જ્ઞાનનો ભર્યો મજાનો,
શ્રમ મટયો આવા જાવાનો,
પદવી લીધી નવની. પામ્યો૦ ૪

સંભવ સ્વામી કહું શિર નામી,
દર્શને તારી કિરપા પામી,
લિધી દોરી શિવની. પામ્યો૦ ૫

મહાવીર સ્વામીનું સ્તવન.

(ખૂને જિગરકો પ્રીતેરે બસ ગમમેં તો રે યાર)

કોણ કહેશે રે જિનવરજી તુમને દાતા છો ઉદાર, કોણ૦
તમે મુલકની મૃડી લીધી, તિજોરીમાં ભરી દીધી;
બધી સાધી રીદ્ધી સીદ્ધી રે નથી દેતા તલ ભાર. કોણ૦ ૧

તુમે જાણ્યા જગના ભાવો, ન રાખ્યો કોઇથી દાવો;
દ્રવ્ય ગુણ પર્યાય સ્વભાવો રે, ન ભણાવ્યા કોઈ વાર. કોણ૦ ૨

વળી જોયું જગ તેં નજરે, વળી લીધું તમારૂં મુજરે;
જઈ બેઠા મુગતી નગરે રે, ન બતાવ્યા સારા સાર. કોણ૦ ૩

તમે સીધો મારગ લીધો, અવલો તો છોડી દીધો,
અક્ષયપદ વાસજ કીધો રે; ન કરાવ્યો ત્યાં પ્રચાર. કોણ૦ ૪

તમે અનંત વીર્ય કહેવાયા, અંતરના અરિને હઠાવ્યા;
કોઈ સાથે તમારી ન ફાવ્યા રે, મારો ન હણ્યો હુંકાર. કોણ૦ ૫

હવે પુરો સેવકની આશા, કોઇને ન કરો નિરાસા;
દર્શનના પાડો પાશા રે, વીર? સીધા એક વાર, કોણ૦ ૬

અભિનંદન સ્વામીનું સ્તવન (કવાલી)

વિભુ ચોથા અભિનંદન, જગતના જે અભિનંદન;
પ્રભુ સંવરતણા નંદન. કરૂં હું ભાવથી વંદન. ૧

કરે ગતિ ચાર નિકંદન, નિવારે ભવ તણો ફંદન;
કષાયા તાપને તદ્દન. હરે વેગે યથા ચંદન, ૨

કરાવે કરમ અ ક્રંદન, તોડાવે રાગનુ બંધન;
કરે છે મોહ ગઢ ભંજન, વળી ભવ નીર ઉલ્લંઘન, ૩

સજે વાણી સુધા સ્યંદન અંજાવે જ્ઞાનનું અંજન
રમે નિજ આતમા નંદન, યથા સુરનાથનો નંદન ૪

સુ ધ્યાના નલથકી ખંડન, કરી બાજેલ કરમેં ઘન,
સજે દેવો અભિવંદન. વલી પૂજે ગ્રહી ચંદન. ૫

તનુ જર્યું દીપતું કુંદન, કમલ પેરેજ સુગંધન,
ભવિ ભૃંગાર આનંદન, ઉત્તમ દર્શન કરે રંજન, ૬

ચંદ્રપ્રભુનું સ્તવન (કવાલી)

જિનેશ્વર ચંદ્ર પ્રભુ તારી, ન તુલના ચંદ્રમા પામે.
મલી સુરેન્દ્ર નરેંદ્રા, ગુણો ગાયે રહી સ્હામે, ૧

સદાનો છે ઉદય તારો, ઉદયને અસ્ત એ થાયે;
વળી અક્ષય સ્થિતિ તારી, ક્ષયી એ ચંદ્ર કહેવાયે. (૨)

નથી તુજમાં કલંક જરી, કલંકી ચંદ્રને કહિયે.
પ્રભુ તું દોષ વર્જિત છો. સદા દોષાકર સહિ એ. (૩)

અનંતી છે કલા તારી, કલા છે સોળ ચંદ્ર તણી,
તમે છો નિરભય પ્રભુજી, રહે નસ બીક રાહુ તણી, (૪)

તમે કર્યો નાશ ભવ કેરો. વસે એ ભવની સંગાથે.
દિયે આનંદ તું બુધને, ધરે એ દ્વેષ બુધ સાથે. (૫)

કલંકાદી હરો દોષો, કરો મુજ આપના જેવા,
શશી લંછનના બ્હાનાથી. કરે ઇમ કહી ચરણ સેવા, (૬)

બ્રહ્માંડ તણી હરો ભ્રમણા. અવિચલ સ્થાન દ્યો દેવા,
કહે ઇમ ચંદ્ર તુજ જિનજી થઇ છે સેવની હેવા. (૭)

અપૂર્વ ચંદ્ર હે સ્વામી, નથી ખામી જરી અંગે,
દર્શનની ઉમેદ પુરીને, બેસારો આપની સંગે. (૮)

મલ્લીનાથ ભગવાનનું સ્તવન (કવ્વાલી)

જગતમાં દેવ તું સાચો, મલ્લી જિનરાજ કુંભોદ્ભવ;
ન તુજમાં દોષ પણ એકે, તર્યા સંસાર સરિતા ધવ. (૧)

રતિ અરતિ અને હાસી, નથી ભય શોક દુગંચ્છા;
ન પાંચે અંતરાય વળી, કરી છે કરમની ભૂંચ્છા. (૨)

નથી તુજ રાગ દ્વેષ વળી, નથી તુજ મોહને વિકથા;
નથી મિથ્યાત્વ ને નીદ્રા, નથી અજ્ઞાન કામ તથા. (૩)

કરે કોઈ રતિ અરતી, દુગંછા હાસ્ય શોક ભીતી,
ધરે કોઈ કામની સંગે, ધરી દિલમાં ઘણી પ્રીતી. (૪)

ઘણા દ્વેષી અને મોહી, મિથ્યાત્વી આલસુ કામી,
અજ્ઞાની દેવ મેં દીઠા. ન તુણી આંખ તો પામી, (૫)

સરવ ગુણના નિધી તું તો, સર્વ જ્ઞાની સર્વ દર્શી,
સરવ સુખ સંપદા દાતા. સર્વ સિધી તેં આકર્ષી; (૬)

પ્રભુ તું વીતરાગ અને સરવથા વીતદ્વેષી છો,
કહે દર્શન ચતુર બાલક, પરમ પદ પુર પ્રવેશી છો. (૭)

મહાવીર સ્વામીનું સ્તવન (કવાલી.)

સકલ ગુણુ ધામ જિનવર તું બુલાવું શું કહી તમને.
કહું જો ચંદ્રમાં તમને, કલંકી એ દિશે અમને. ૧

વંદુ જો સૂર્ય હે સ્વામી, અતિ આતાપ કરનારો;
વળી ભાખું કદી મેરૂ કઠિનતા એ છે ધરનારો. ૨

ભણું બ્રહ્મા તમોને જો, જરાતુર બહુ જણાયે છે.
ઉચારૂં છું કદી વિષ્ણુ સદા કપટી ગણાયે છે. ૩

ગણું જો કામદેવ વળી રહિત છે અંગથી પોતે,
વિચારૂં જો જિનજી ઇન્દ્ર સ છિદ્રી એ ગણાયો છે. ૪

ઉચરતા સુરતરૂ પ્રભુજી અતિ જડ એહને કહિયે,
વળી ચિંતામણી કહેતાં મનોહર ઉપલ છે સહિએ. ૫

અઢારે દોષથી વર્જિત હવે મેં ઓલખ્યા સ્વામી.
ચરિમ જિનરાજ તીર્થંકર ભવિ જનના છો વિસરામી. ૬

મેટો ભવની સવી ભ્રમણા. કરો દૂરે પ્રભુ મારી.
મળ્યું છે ભાગ્યથી દર્શન, તમારૂં પરમ સુખકારી. ૭

ઋષભજીન સ્તવન

(મને તો મળિયો મારો નાથ)

સદા હું જિનગુણમાં રહું લીન, અધિક છે ઇચ્છા એ મારી.
નિદ્રા અનાદીની આવી છે ગાઢી મુજને.
ચેતનને ઘેરી લીધું ઘેરી ઘરરરરરરરરે. સદા હું૦ ૧

જ્ઞાન નયન મારા ઘેરાઇ ગયા છે સારા,
શિથિલ થયા છે પગને હાથ પગને. પરરરરરરરે. સદા હું૦ ૨

ઉગે જો વિવેક રવી ઉંઘ ઉડી જાય સવી,
ચેતે ચેતન તો સચેત, ચેતે સરરરરરે. સદા હું૦ ૩

નિલું જ્ઞાનથી બધું, હાથ પગ કરૂં સુધું;
મન મંદિરમાં જાઉં રોજ જાઉં જરૂરરરરરે. સદા હું૦ ૪

પ્રથમ જિણંદ જોઉં શુદ્ધ ભાવે પાપ ધોવું.
દર્શનની ઉમેદ ફલે તો જ ફલે ફરરરરરરરે. સદા હું૦ ૫

અજિત જીન સ્તવન.

(વિમલા નવ કરશો ઉચાટ, રાગ સોરઠ)

સજનો અજિત જિનેશ્વરના ગુણ દિલમાં ધારશો રે;
હરનિશ તારંગાના સ્વામીને સંભારશો રે, સજનો૦

મારગ મોક્ષપુરીનો સીધો, સેવક જનને દાખી દીધો,
જ્ઞાનને દર્શન ચારિત્ર સુખકર પાલજોરે. સજનો૦ ૧

જીવ અજીવનું જાણુપણું જે સમ્યગ રીતે જ્ઞાન ગણો તે.
તે ઉર ધરી અજ્ઞાન પણું નિવારજો રે. સજનો૦ ૨

દેવ ગુરૂને ધરમની શ્રદ્ધા, તેહને સમક્તિ ગણિયે બધા,
સકલ ગુણોમાં એ ગુણ મુખ્ય વિચારજોરે. સજનો૦ ૩

દેશને સરવથી સાવદ્ય તજવું, ચોખા ચિત્તથી ચારિત્ર ભજવું,
શુધ ક્રિયાથી કર્મ અરિને વિદારજો રે. સજનો૦ ૪

એ ત્રણ ગુણ તું બ હૃદય ધરતાં તીરે જઈયે ભવજલ તરતાં,
દર્શનની ઉમેદને પૂરણ પાલજો રે. સજનો૦ ૫

સ્તવન.

(આવી મુરતી મોહનગારી એ રાગ)

વદ વદ વચન વિભુ તું વદનથી,
નમું નિત્ય હું તન મનથી. વદ વદ૦

શંકા અમારી દૂર નિવારી.
નિસંશય પદના અધિકારી,
અમને કર સુ વચનથી. વદ વદ૦ ૧

મોક્ષ છે સાચો ભવ રંગ છે કાચો.
એમાં મત કોઇ રાચો માચો,
કહી દ્યો આપ કથનથી. વદ વદ૦ ૨

મત મત ભેદે સંશય વેદે;
તરક પરંપર કોઈ ન છેદે,
શંકા રહે છે મનથી. વદ વદ૦ ૩
આતમ સત્તા લાગે ન પત્તા
ન માનું તો ખાઉ ખતા,
ભય આવે છે. પતનથી. વદ વદ૦ ૪
એક વખત જો મૌનપણું તજો,
હરો સંદેહ મુજ દિલમાં વસજો,
ઉમેદ સરે દર્શનથી. વદ વદ૦ ૫

સ્તવન.

(થઈ પ્રેમ વશ પાતલિયા)

પ્રભુ ? વાંક માફ આ કરશો, મેં ગુન્હો કર્યો છે તમારો રે, પ્રભુ૦
તારા વચનમાં શંકા કીધી, શ્રદ્ધા ધરીના સ્થાપ્યા.
વળી હિતકર હુકમ ઉથાપ્યા, એ કોઈ સન્મુખ ન ઉચરશોરે. પ્રભુ૦
તુજ પ્રતિમા ન સાચી માની, ન ઠવણા નિક્ષેપો રાખ્યો;
દ્રવ્ય પૂજામાં ભાવ ન દાખ્યો, વ્યવહાર વિમુખ નવ ફરશોરે. પ્રભુ૦
એકાંત માર્ગ ધર્મો એકાંતે, શુદ્ધ અનેકાંત ન પકડયો;
સદ નય સાથે હું ઝકડયો, દુરનયવાદી ન ગણશોરે. પ્રભુ૦
શુદ્ધ સંવેગી પક્ષ ન લીધો, તેહને મિથ્યાત્વી મેં ભાખ્યો,
નથી વૈરાગ્યનો રસ ચાખ્યો, અ સંવેગી ગણી ન લડશોરે. પ્રભુ૦

વીતરાગ ગુરૂ ધર્મની શ્રદ્ધા, રૂદય ધરી ન પ્રીતે;
અ દેવાદી ધર્યા મેં ચીતે, મને મિથ્યાત્વીને ઘડશોરે. પ્રભુ૦
દેખાદેખી તુમ દરવાજે, આજે હું આવ્યો છું,
તુજ દર્શન દિલ લાવ્યો છું, મારી ઉમેદ પૂરી કરશોરે. પ્રભુ૦

સ્તવન

(ગોપીચંદ લડકા બાદલે વરષેરે કંચન મહેલરે)

શ્રીપદ્મપ્રભુજી ચરણકમલમાં મને રાખજો,
હું છું ભવ જંગલનો ભમરો, ભમિયો છું બહુ ભ્રમમાં;
અમ્લાન કમલ ન મલિયો મુજને,
પકડયો છું વળી શ્રમમાંરે. શ્રીપદ્મ૦ ૧

કરમાયેલા કમલમાં હું મહાલ્યો,
રગ રગ રજ રંજાયો;
જ્ઞાન નયનથી અંધ થયો વળી,
કાંટાથી વિંધાયોરે. શ્રીપદ્મ૦ ૨

થયો આશક હું વિષયના રસમાં,
ઉડવા દાવ ન ફાવ્યો;
પુણ્ય સૂર્યનો અસ્ત થયો ત્યારે,
કર્મ કોશમાં ફસાયોરે. શ્રીપદ્મ૦ ૩

મોત માતંગના મુંહમાં પડિયો,
મહા મોહથી મુંઝાયો;
એ દુઃખથી ઉગરવા કોઇ,
જડિઓ ન જનનીનો જાયોરે. શ્રીપદ્મ૦ ૪

સદા વિકાશી નિષ્કંટકને,
પાતક રજ નથી જેહમાં;
અવિચલ કમલાનું છે આલય,
ઉમાહ્યો છું તેહમાંરે. શ્રીપદ્મ૦ ૫

પુરણ ગુણ પરિમલ મહેકે છે,
ચૌદ ભુવનમાં જેહનો;
તે પદ અરવિંદ દર્શનને દ્યો,
પ્રેમ બની રહે એનારે. શ્રીપદ્મ૦ ૬

સ્તવન

(ધન ધન વો જગમેં નર નાર એ દેશી)

શ્રીસુપાર્શ્વ જીન મહારાજ. તુજ ભક્તી પારસ જેવી. શ્રીસુપાર્શ્વ૦
નથી કઠિનને કરકષ કયાંય, વલી મેલ ન લાગે જ્યાંય;
છે નિરમલ બહારને મહાંય, કદિય સરાણે ન ચડે તેવી. શ્રી૦ ૧
છે કોઇ અપુરવખાણુ, જેને ન જાણે અજાણુ;
જ્યાં એક નથી પાષાણુ, ત્યાંથી નિકલેલી છે એવી. શ્રી૦ ૨

જે જીવ છે લોહ સમાન, તેના બદલાવીને વાન;
કરી દે છે ઝટ કલ્યાણ, વાંછે જેને દેવને દેવી. શ્રી૦ ૩
પારસ મણીતો નિત એમ, કરી આપે લોહનું હેમ,
પણ નિજ સમ ન કરે જેમ, ભક્તી વારસકરે તત્ એવી શ્રી૦ ૪
કોઇ પુણ્ય જો થાય. તો ઉમેદ પૂરી થાય.
દર્શનનું કામ સિધાય. દારિદ્ર દૂર કરે સ્વયમેવી. શ્રી૦ ૫

સ્તવન

(ધન ધન વો જગમેં નર નાર)

વંદો ચંદ્ર પ્રભુ ભગવાન ચંદ્ર અપૂર્વ જે દીશે છે. વંદો૦
જેની છે કલા અનંત ભાંગે જે સાદિ અનંત;
ભવનો લાવે છે અંત, નિત્ય ઉદય પામી વિકશે છે. વંદો૦ ૧
અંતરનો હરે અંધકાર, બુધ ઉપર રાખે પ્યાર;
છે તન નિરદોષાકાર જોતી, જલહલતી અતિશય છે. વંદો૦ ૨
અઘ ઉદધીનો કરે શોષ. પુણ્ય પંકજનું કરે પોષ;
હરે દૂર કલંકના દોષ; જેનાથી જડભાવ ખસે છે. વંદે૦ ૪
દીધું ગમનાગમન નિવાર, થિર બેઠા થઇ એકતાર:
અક્ષીણ છે પૂર્ણ આકાર, પરમેશ્વર થઇ શિવમાં વસે છે. વદો૦ ૫
નથી એકે કોઇની બીક, રહે છે નિત મિત્ર નજીક;
અધિકી વિધુથી પણ ઠીક, મહિમાં જિનની વિશ્વ વિષે છે. વંદો ૬

યુગ સિધીનિધી ઇન્દુ સાર, માહ સુદ એકમ વિધુવાર.
ગામ જલોત્રાના શણુગાર, પ્રભુ દર્શનથી મન હર્ષે છે. વંદો૦ ૭

સ્તવન

(દાસ પરે દયા લાવોરે દયાલુ દેવા.)

બાલ કહીને બોલાવોરે, શીતલ સ્વામી બાલ કહી૦
તુંતો છે નાયક મારો, હુંતો છું સેવક તારો;
તે દિલમાં કેમ ન લાવો લાવો રે. શીતલ સ્વામી દાસ૦ ૧
મુજ જેવા છે બહુ તુજને, તુજ જેવા એકજ મુજને,
મુજ બીજે તો નથી દાવો દાવોરે. દાસ કહી૦ ૨
તુમને સૌ કોઇ બોલાવે, અમને ન કોઇ તેડાવે;
તુજ વિણુ મુજ કુણ કહે આવોરે. દાસ કહી૦ ૩
છોટો મોટાને ચાહે, એવી આ જગની રાહે;
મુજને બહુ આપતો ભાવો ભાવેરે. દાસ કહી૦ ૪
મોટા જેહ સ્વામી હોવે, સેવકની સહામું તે જુવે;
છે એહ ઉખાણો ચાવો ચાવોરે. દાસ કહી૦ ૫
ઉભો છું સન્મુખતારી, પૂછો કાંઇ વચન ઉચારી;
અમને તો મત બહુ તાવો તાવોરે દાસ કહી૦ ૬
ભક્તીનું નહીં ભાડું માગું ભક્તી છોડીને નહીં ભાગું.
એક વચનનો પ્યાલો પાવો પાવોરે. દાસ કહી૦ ૭

હઠ શું આ ઝાલી ઠાલી બોલી ન બોલો વહાલી.
તે સુણવા થયો છું બાવો બાવોરે. દાસ કહી૦ ૮

શીતલ જે બોલી તારી, શીતલ મુઝ કરશો ઠારી;
તપિયો છું ભવદવથી આવો આવોરે. દાસ કહી૦ ૯

કહેતા હતા પહેલાં મુજને, બોલાવીશ પ્રીતે તુજને;
તે બોલ તો દિલમાં ધ્યાવો ધ્યાવોરે. દાસ કહી૦ ૧૦

આ શું તેં કીધું આજે. ઉત્તર ન દીધું અવાજે.
જરા બેસો કહીને ઠાવો ઠાવોરે. દાસ કહી૦ ૧૧

જો નહીં તમે બોલો વાણી, તો તુમને મુંગો જાણી.
જગમાં તો બહુ કરીશ હું ચાવો ચાવોરે. દાસ કહી૦ ૧૨

કાંતો કહો આવો સાંઈજી, કાંતો કહો જાઓ અંહીથી;
પણ મત પકડો હઠ આવો આવો રે, દાસ કહી૦ ૧૩

કીધું લોકોત્તર રાગે, પ્રભુજી મેં તારી આગે,
કોઈ દોષ ન મનમાં લાવો લાવો રે. દાસ કહી૦ ૧૪

દર્શનની ઉમેદ પૂરો ચિત્તની ચિંતા ચુરો;
મુજ એકજ ભાવો ભાવો રે. દાસ કહી૦ ૧૫

શ્રી સુવિધી નાથની લાવણી.

(સેવક શિરનામી તને ગુજારે અરજી એ દેશી)

શ્રી સુવિધી નાથ જગતાત નમે સુરવ્રાત તમે ચિરંજીવો,
તું છે કોઈ ચૌદ ભુવનમાં અપુરવ દીવો.
તુજ જ્યોતીનું જે તેજ દિશે છે સહેજ દશે દિશ સારૂં,
હરે કંદર મંદિરની અંદરનું અંધારૂં. શ્રી સુવિધી નાથ૦ ૧
છે ગાત્ર તમારૂં પાત્ર મહા ગુણ માત્ર અનંતા રહે છે,
પરતાપ છતાં નિરમાપ આતાપ વહે છે;
વળી તેલ નથી તલભાર છતાં નિરધાર રહે તું જગ તો,
નથી તેલ મેલનું લેપ એક પલ લગતો. શ્રી સુવિધી નાથ૦ ૨
મહા વાયુ વાય કદાય નહિં ઓલવાય રહે ઝલહલતો,
છે અચલ વલી જે વિમલ નથી ચંચલ તો;
વળી સ્નેહનું કરો છો પાન ધરિને ધ્યાન ધુમ ન દીશે.
ભજતા તુજ અંગ પતંગ ઉમંગથી હીસે. શ્રી સુવિધી નાથ૦ ૩
મહા રાગ તેલનું નાશ કરો છો ખાસ છતાં છો પૂરા,
છો વીતરાગ ભગવાન, નથીજ અધુરા;
જો પડે પ્રહાર અપાર સદા આકાર અખંડ રહે છે,
જે રૂઇ વગરની શુધ દશાને વહે છે. શ્રી સુવિધી નાથ૦ ૪
જ્યાં બંધ નથી તલભાર ધરિ અવતાર ત્યાં છો વસતા,
કોઇ આવી ખસેડે તોય, નથી કયાંઇ ખસતા;

જંગલમાં મંગળરૂપ તમારૂં રૂપ ધરે જે દિલમાં,
તેને શિવ મારગ નજરે આવે પલમાં. **શ્રી સુવિધી નાથ૦ ૫**

હે નાથ નિરંજન ધામ કરૂં ગુણ ગ્રામ તમારા પ્રીતે,
કરવા અંજવાલું વસજો મારા ચીતે;

કહે ચતુર વિજયનો બાલ, પ્રભુજી ટાળ અંધારૂં મારૂં;
શુભ ઉમેદ રાખી દર્શન કરૂં તમારૂં. **શ્રી સુવિધી નાથ૦ ૬**

સ્તવન.

(દીનાનાથ તું એક આધાર મારો)

મહા શ્રેયના ગેહ શ્રેયાંસ સ્વામી,
નમું નિત હું ચિતથી હિતકામી;
આ ભાખું છું ભગવંત હું ભક્તિ ભાવે,
ભલી ભાવના ભક્તીની કયારે આવે; ૧

કરી આત્મમંદિરની શુદ્ધિ સારી,
કરૂં ત્યાં પ્રતિષ્ઠિત મુરતી તમારી;
મુક્તાફલો લઇને સુમતી વધાવે,
ભલી ભાવના ભક્તીની કયાંરે આવે. ૨

પ્રશમ પાણીથી હું પ્રથમ થઇને પાવન,
પછી નાથનું મહા કરાવું સુન્હાવન;

આલોચના અંગ લુણે લુસાવે,
ભલિ ભાવના ભક્તીની કયારે આવે, ૩

ચિદાનંદ ચંદન નવાંગે ચડાવું;
મહા નિરજરા પુષ્પમાળા પહેરાવું.
ભલા ભવ્ય ભમરા સુગંધે ખેંચાવે;
ભલી ભાવના ભક્તિની કયારે આવે. ૪

દયા ધુપની શુદ્ધ ધુણી ધખાવું,
ધર્મ ધ્યાનનું મહા પ્રદીપ દિપાવું,
ન વાયુના જોરે જરીયે ઓલવાયે,
ભલી ભાવના ભક્તીની કયારે આવે. ૫

પ્રક્ષીણ મોહ અક્ષતથી સ્વસ્તિક આલેખું,
જગત જ્ઞાન કેવલ ફ્લોધી હું પેખું,
અનાહાર પદવી નિવેદ કહાવે,
ભલી ભાવના ભક્તીની કયારે આવે. ૬

લઘુ પંચ અક્ષરની સ્તુતી ઉચરતા,
બનું એક રૂપી તું સાથે વિચરતા,
વદે એમ દર્શન જો જ્યોતિ જગાવે,
ખરી ભાવના ભક્તીની તોજ આવે. ૭

સ્તવન.

(પશુમાં પડી એક તકરાર એ રાગ)

પ્રભુજી ! ધરશો ન દિલમાં રીશ, પ્રભુજી૦
તું દાયકને હું માંગણુ છું, માગણી તો માંગીશ;
હઠીલો થઇને હઠ માંડીશ. પ્રભુજી૦

આજ કાલ કહી કહી લલચાઓ, દીધું ન હાથથી દાન;
ફરી ફરી ફેરા ફરીને થાકયો, તોય ન દીધું ધ્યાન;
હવે હું ધધરે ધરણું ઘાલીશ. પ્રભુજી૦ ૧

મોખ નથી હમણા દેવાનું, એમ મુખે કહેતા શું થાય;
સૂડી વચ્ચે સોપારી આવી, એવો થયો છે ન્યાય;
છતાં નહી લીધા વિણુ જાઇશ. પ્રભુજી૦ ૨

ના કહો તો માન રહે ના, દેતા ન ચાલે જીવ;
દાતાથી તો કંજુસ સારો, ના કહી આપે સદીવ;
જિણુંદજી ખાલી કિમ કાઢીશ. પ્રભુજી૦ ૩

ઓછું થઇ જાશે એવા ભયથી, દેવા કરો છો વિચાર;
માંગ જે માંગે આપું તુજને, તે કિમ ઉચર્યા ઉચાર;
હવે તું મુજને શું આલીશ. પ્રભુજી૦ ૪

દાયક બિરૂધ ધરીને બેઠા, કલ્પતરૂની જેમ;
હવે વાચકનું વાંછિત દેતા, ગંદા ગળો છો કેમ;
જગતપતી બિરૂધ કિમ પાલીશ. પ્રભુજી૦ ૫

ધાર્યાથી તને ઓછું આપીશ, કાઢીશ નંહીજ નિરાશ,
એટલું પણ નવ મુખથી બોલો, શું અમ સરશે આશ,
વલી મુજ દારિદ્ર શું ટાલીશ. પ્રભુજી ૦ ૬

તું દારિદ્ર દાવાનલ શમાવા, સમજી મેઘ સમાન;
વર્ષ વર્ષ કહેતો હું મુખથી, ધરૂં છું તારૂં ધ્યાન;
છતાં મને કયાં સુધી તું તારીશ. પ્રભુજી૦ ૭

વીતરાગ પદ પામી પોતે, ભક્તને રાગી કીધ.
રાગીને શું આપે નિરાગી, હવે મેં સમજણ લીધ
મુનીશ્વર પ્રચ્છાને વારીશ. પ્રભુજી૦ ૮

નરપતિ ચંપા નગરીના છો, વાસુપુજ્ય પરમેશ;
ચતુર વિજયનો કીંકર કહે છે, દર્શન તારૂં હમેશ;
મલો મુજ ઉમેદ દિલ રાખીશ. પ્રભુજી૦ ૯

વિમલનાથ ભગવાનની લાવણી

રૂમઝુમ કરતી નિસરી ભિલડી તપ છોડાવા ચાલીજી.
અખિયાં ખોલકર શિવજી બેઠા કોણ પુરૂષ ઘરનારી જી.
એ દેશી.

વિમલ પ્રભુના જ્ઞાન સરૂપી,
વિમલ સરોવર સંચરિયે,

પરમ આનંદ વિમલ જલ લઇને,
અંશ થકી કલિ મલ હરિયે,
ચરણ સરોજની સેવા સજિયે,
ભજિયે ગુણ મકરંદ વલિ,
ભમર રહે જ્યું લીન કમલમાં,
તેમાં જઇયે તેમ મળી. વિમલ૦ ૧

ધીરે ધીરે નિરમલ નીરે,
માનસની તીરે ફરિયે;
સ્થિરતા ભાવે પદ પંક્તીમાં,
હંસ પરે મોતી ચરિયે,
આશ્રવરોધ સુશુદ્ધ ઉદકથી,
તૃષ્ણા તાપ પરિહરિયે,
લહેરો લહિયે મહાનંદ કેરી,
મોહ મગરથી દિલ ડરિયે. વિમલ૦ ૨

પરિશ્રમ પામેલા પંથીનો,
પંથ પરિશ્રમ જેહ હરે.
મીન પરે ત્યાં લીન રહેલા,
પ્રાણીને તે શાંત કરે,
વિષમ કષાયોના પરિતાપે,
તપવા દે ન આપ પદે,

ઉપશમ કલ્પની છાયા કરિને,
વિપદ હરિને સંપદ દે. વિમલ૦ ૩

પાલ વિનાના આલવાલને
પોષે છે સંવર રેડી,

શસ્ય પદારથ બહુ ઉપજાવી,
ખવાવે તોડી બેડી,

મહા દુષ્કાળો પડતા પણ જે;
પામે નહી વળી શોષ જરી,

કલ્પાંતિકનો વાયુ વાતા,
ચંચલ થાય ન એક ઘડી. વિમલ૦ ૪

સુર નરનારી નટ ન ત્યાગે,
ઝટ ઘટ ભરે ખટ પટ છોડી;

પામે તીર તરીને તરીજયું,
રૂદયમાં ઝીલે જઇ દોડી;

વિમલ પ્રભુની લાવણી ગાવે,
દર્શન વિજય પરમ ભાવે.

અંતર તાપ મિટે તેના જે,
વિમલને વિમલપણે ધ્યાવે. વિમલ૦ ૫

સ્તવન રાગ હોરી

(ઘેર આવો વસંત વિલાસી એ દેશી)

શ્રીધર્મ નાથ ધર્મ બતાવો, મટી ભરમ મર્મ શિખાવો. શ્રીધર્મ૦
નિજ નિજ મતને સૌ કોઈ સ્થાપે, કોઇ ન ઉથાપે ચાવો;
ઉથાપે તો પક્ષ ન ચાલે, ક્યાંથી સત્ય તે પાવો,
વિભુ ભયનો ભર્મ ભુલાવો. શ્રીધર્મ ૧

મારૂં એ સાચું ઈમ જો માનું. તેહ તો ન ચાલે દાવો;
સાચું એ મારૂં ઈમ જો માનું, ક્યાંથી મળે તે સુણાવો.
લેવાને તેહ ફરમાવો. શ્રીધર્મ૦ ૨

એકાંત પક્ષમાં લક્ષ જો દઈયે, તો અમ ઉલટા ઠરાવો,
અનેકાંત પક્ષમાં દક્ષ નથી હું, સ્યાદ્વાદ ભોજ્ય ખવરાવો;
ભુખ્યા અમને ન મુઝાવો. ધર્મ૦ ૩

સત્યાસત્યનું નિશ્ચય કરવા, મૂઢમતી છું હું આવો;
યુકતીવંત વચન મનાવા, સુમતી ભલી દિલ લાવો;
મને સત્યનો ગ્રાહક બનાવો. શ્રીધર્મ૦ ૪

ધામધમમાં ધર્મ જો ધરિયે, તો તુમને કિમ કરી ગાવો;
ચતુર વિજયના દર્શન કહે છે, ધર્મનો સ્વરૂપ શિખાવો;
મુજ ઉમેદ પુરી કરાવો. શ્રીધર્મ ૫

સ્તવન રાગ સંસાર
(વિમલચલ વાસી મારા વહાલા એ દેશી)

શ્રી કુંથુ જિણુંદ બંધ તોડો, કુકંદના મારા હવે, મારા હવે૦
થાઉં નિરબંધ સ્વછંદ અંગે, મુણીંદ છેદ દુઃખો સવે, છેદ૦
પ્રકૃતિ સ્થિતી રસ પરદેશ એ, બંધ પડયા છે ચાર;
વિત્યા કાલ અનંતા તો પણ, તૂટયા ન એકે લગાર. કુકંદના૦ ૧
પડદો પાડી પોળીયો બેઠો, મારી તિજોરી પાસ;
કેવલ કમલાની મૂડીને, જોવા ન દિયે ખાસ. કુકંદના૦ ૨
વળી કલાલે કલા કરીને, મોહ્યું મારૂં ચીત;
મદ્ય પાનથી ઘેલો કરીને, છીનવીયું વ્રત વીત્ત, કુકંદના૦ ૩
ભંડારી ભૂંડો ભંડારમાંથી, દેવા દે ન દાન;
બન્ને હાથ પડયા છે હેઠા, પૂરો થાઉં હેરાન. કુકંદના૦ ૪
નાથ કને કહું છું હુ કથીને, પહેલા બંધની વાત;
જ્ઞાન ને દર્શન વ્રત શકતીનો, ખૂબ કરે છે ઘાત. કુકંદના૦ ૫
ત્રીશ સુધી આવર્ણ વિઘનને, મોહ મહા નાદાન,
સિત્તર કોટા કોટી સાગર, સુધી કરે છે હેરાન. કુકંદના૦ ૬
નરક નિગોદમાં છેદન ભેદન, દુઃખ દિયે રસ બંધ;
કર્મ રેણુથી બહુ ખરડાયો, ગુરૂ કરમી થયો વલી અંધ. કુકંદના ૭
ચાર બંધથી બંધાયો છું, ભવ પિંજરમાં નાથ;
બંધ વિનાનો તો હિજ થાઉં, જો મને દયો સંગાથ, કુકંદના૦ ૮

વજ્જરની જો સાંકલ ટૂટે, ટૂટે કર્મનો કોટ;
દર્શન રાજ્ય સ્વીકારી લેશે, મારી તે ડોટ. કુકુંદના૦ ૯

સ્તવન

(પામ્યો પામ્યો પદ્મમણી આવો હો૦)

લાગી લાગી લગન દિલ લાગી હો,
અરનાથની લગની લાગી;
મારી ભાગ્યદશા આજ જાગી હો,
અરનાથની લગની લાગી,
મનથી તમામ મેં મમતાત્યાગી,
કંચ કામની ને કરી આઘી,
ભવની ભ્રાંતી ભાંગી હો. અરનાથની૦ ૧

તુષ્ણા નદીને હું ગયો પલાંગી,
મોહની ચુંદડીને વાડમાં ટાંગી,
દ્વેષને મારી ડાંગી હો. અરનાથની૦ ૨

અરજીન ઈન્દ્રનો થયો છું રાગી,
રાગ ગીરી તું જાને ભાગી,
તને વજ જાશે વાગી હો. અરનાથની ૩

થયો છું નિરમોહી નિરાગી,
જીવું છું ભકતીની ભીક્ષા માંગી,
ભૂખ ભાંગે છે સુભાગી હો. અરનાથની૦ ૪

બાંધી મેં પ્રભુની આજ્ઞાપાગી,
થાઉ નહીં હવે કયાંઇ સરાગી.
દર્શનની ઉમેદ જાગી હો. અરનાથની૦ ૫

ગહુંલી.

(પંજાબ દેશમાં વિહાર કરતી વખતે બોલવાની.)

(હોપિયુ પંખીયડા નારી ગુણાવળી તામજો. એદેશી)

હો સદ ગુરૂવરજી, સંઘ સકલ કહે આજજો,
તુમ ચરણોમાં જોડી દોયે હાથનેરે લોલ,
હો સદ ગુરૂવરજી, વીત્યું છે ચોમાસજો,
કેમ ઉદાસ પણું થયું છે આપનેરે લોલ, ૧

હો સદ ગુરૂવરજી, જાણ્યું છે અમે હેતુ જો,
વિચરવા મન કીધું દૂર દેશાંતરેરે લોલ.
હો સદ ગુરૂવરજી, કર્યું ચોમાસું સારૂં જો,
લાભ ઘણો દીધો છે, અમને પુરતોરે લોલ ૨

હો સદ ગુરૂવરજી, મૌન ઇગ્યારસ આંહી જો,
 કીધા વિના નહી જાશો એ અમ વિનંતી રે લોલ,
હો સદ ગુરૂવરજી, કર્યો છે જે ઉપકાર જો;
 તેહ ભુલાશે નહીય ગુરૂજી અમ વતીરે લોલ. ૩
હો સદ ગુરૂવરજી, કાઠીયાવાડ આ દેશ જો,
 કેમ ગમ્યો ન તુમને ભૂમી છે ભલી રે લોલ;
હો સદ ગુરૂવરજી, આ ભુમીને છોડીજો,
 દેશ પંજાબ તણી ભૂમિ કેમ સાભરીરે લોલ. ૪
હો સદ ગુરૂવરજી, સોરઠના આ લોકજો,
 તેહની સંગત કેમ ગમી ન આપને રે લોલ,
હો સદ ગુરૂવરજી, પંજાબી જે લોકજો,
 સાંભરીયા છે મનમાં મુનિવર આપને રે લોલ. ૫
હો સદ ગુરૂવરજી, અમને કોણ આધારજો,
 આપ વિના કુણ બૂઝવશે લોકો ભણી રે લોલ,
હો સદ ગુરૂવરજી, બોલંતાં મુખ બોલજો,
 ફૂલ ઝરે છે વાણી તો મીઠી ઘણી રે લોલ. ૬
હો સદ ગુરૂવરજી, કોણ કરશે ઉપકારજો,
 દઇ ઉપદેશ મનોહરડો યુક્તિ વડેરે લોલ,
હો સદ ગુરૂવરજી, કોણ દેશે પચ્છખાણજો,
 આંબીલ ને ઉપવાસનું નિત દિન ચડેરે લોલ. ૭

હો સદ ગુરૂવરજી, કોણ દેશે અમ ઘેરજો,
ઉત્તમ ધર્મલાભ સદા ખિલતે મુખે રે લો,

હો સદ ગુરૂવરજી. સાંભળીને અમ અરજજો,
દેવા લાભ હવ કોણ આંગણે આવશે રે લોલ. ૮

હો સદ ગુરૂવરજી, પુછશું કયાં અમે પ્રશ્ન જો,
મધુર વચનથી ઉત્તર કોણ હવે આપશે રે લોલ,

હો સદ ગુરૂવરજી, ઝીણી તત્વની વાત જો.
આપ વિણા તે કાને કોણ સંભલાવશે રે લોલ. ૯

હો સદ ગુરૂવરજી, દેશું કયાં અમે દાનજો,
આપ સરીખા પાત્ર ગુરૂ કયારે મલે રે લોલ,

હો સદ ગુરૂવરજી નાની મોટી ભૂલજો,
શિખામણ દેને તે કોણ હવે કાઢશે રે લોલ. ૧૦

હો સદ ગુરૂવરજી, મુંહ રૂપાલી મુહપત્તીજો,
અમુલક દંડો હાથ બગલ ઓઘો ભલેરે લોલ,

હો સદ ગુરૂવરજી, ત્રપણી પાત્રા બાંહેજો,
અંગે સાદા કપડા ખંભે કાંબલીરે લોલ. ૧૧

હો સદ ગુરૂવરજી, એવો સુંદર વેશ જો,
સાધુનો ધારીને અતિશય શોભતા રે લોલ,

હો સદ ગુરૂવરજી, આંગણીયું અમ આજજો,
કોણ દિપાવશે ઉભા રહીને મલપતા રે લોલ. ૧૨

હો સદ ગુરૂવરજી, ગુરૂ વિરહ ન ખમાય જો,
પણ સાધુ તો પાણી જિમ વહેતા ભલા રે લોલ,

હો સદ ગુરૂવરજી. કિમ કરશો બહુ પંથ જો,
વિચરંતા વળી અંગે લાગશે થાકલારે લોલ. ૧૩

હો સદ ગુરૂવરજી, સહેવી પડશે ટાઢજો,
વળી મારગ છે વિકટ ઘણો મારવાડનોરે લોલ,

હો સદ ગુરૂવરજી. થોડા દિવસ ખમો આંહી જો,
હમણાતો ચમકારો છે બહુ ટાઢનોરે લોલ ૧૪

હો સદ ગુરૂવરજી, કરશો નંહી તાકીદ જો,
હમણા તો છે કામ ઘણા અંહી ધર્મનારે લોલ.

હો સદ ગુરૂવરજી, જો કરશો ઉતાવલ જો,
તો અમે બોલશું બોલ મનોહર મર્મનારે લોલ ૧૫

હો સદ ગુરૂવરજી, પંજાબના મિષ્ટાન્ન જો,
તેમાં લાગી લાગે છે લાલચ ખરીરે લોલ.

હો સદ ગુરૂવરજી, ન ગમી તમને કેમ જો,
સારિ અમારા દેશ તણી આ બાજરીરે લોલ. ૧૬

હો સદ ગુરૂવરજી, લાગ્યું છે પાણી ઠીક જો,
દેશપંજાબ તણું તમને સારૂં ઘણુંરે લોલ.

હો સદ ગુરૂવરજી, ગારીયાધર મોઝાર જો,
કેમ ગમ્યું ન પાણી રાજ કુવાતણુંરે લોલ. ૧૭

હો સદ ગુરૂવરજી, ત્યાંની ભક્તી શ્રેષ્ટ જો,
લાગી છે તમને ચિત્તમાં અંહીથી ઘણીરે લોલ.

હો સદ ગુરૂવરજી, શું આવી અમ ખામી જો,
કેમ ગમી ન ભક્તી રૂડી અમતણીરે લોલ. ૧૮

હો સદ ગુરૂવરજી, શું રીસાણા આપ જો,
શું ન વહોરવ્યા પાત્રા કાંબલ પુસ્તકોરે લોલ,

હો સદ ગુરૂવરજી, જો જોઇએ છે શિષ્ય જો,
તો તુમને વહોરાવ્યા 'દલસુખભાઇ, નેરે લોલ ૧૯

હો સદ ગુરૂવરજી, શું મોહ્યા છો ત્યાંય જો,
એવો કેવો મોટો દેશ પંજાબ છેરે લોલ.

હો સદ ગુરૂવરજી, ઉત્તમ ધરમી દેશ જો,
કાઠીઆવાડતો બીજે નહીં મલશે પછીરે લોલ. ૨૦

હો સદ ગુરૂવરજી, અમૃતસર ત્યાં શહેર જો,
જોવાની મરજી લાગી લાગે છે ખરીરે લોલ.

હો સદ ગુરૂવરજી, પણ આ ધરમી ગામ જો,
ચોમાસાને લાયક મલશે નંહી ફરીરે લોલ. ૨૧

હો સદ ગુરૂવરજી, શું કહિયે વિશેષ જો,
તેમ કરો શુભ જેમ તમારૂં મન કહેરે લોલ,

હો સદ ગુરૂવરજી, નિ:સ્નેહીશું સ્નેહ જો,
માંગ્યા ઘરેણા મેહ મેમાન નંહીરે લોલ, ૨૨

હો સદ ગુરૂવરજી, જોરે ન રહેવાય જો,
હાથીતો કાંને ઝાલ્યો રહેતો નથીરે લોલ,

હો સદ ગુરૂવરજી. ભલે કરો વીહાર જો,
મારગમાં શુકનો શુભ પુન્યથીરે લોલ, ૨૩

હો સદ ગુરૂવરજી, પાવો સંયમ શ્રેષ્ટ જો,
વિઘન ન આવો કોઇ સયમ સાધતારે લોલ,

હો સદ ગુરૂવરજી, વિચરોદેશ વિદેશ જો,
ઉપકારો કરતા રહેશો અવની તલેરે લોલ, ૨૪

હો સદ ગુરૂવરજી, હણજો મોહને રાગજો,
ઉજવલ કિરતી જગમાં ખૂબ ફેલાવજોરે લોલ.

હો સદ ગુરૂવરજી, દેજો વીદ્યા દાન જો,
પશુઓને માનવની ઓળે લાવશોરે. લોલ ૨૫

હો સદ ગુરૂવરજી, જગત વિષે વિખ્યાત જો,
આદરમાન અનેક વિધે બહુ પામજોરે લોલ.

હો સદ ગુરૂવરજી, ચેલાના પરિવાર જો,
ખૂબ વધારી વડતરૂની જિમ વાધજોરે, લોલ ૨૬

હો સદ ગુરૂવરજી ભવિજનને હિતકાર જો,
મોટી પદવી લઇને, સરસ દીપાવશોરે લોલ.

હો સદ ગુરૂવરજી, દઇ ઉપદેશ અમોધજો,
રાય રાણાને જૈન ધરમી બનાવશોરે લોલ. ૨૭

હો સદ ગુરૂવરજી, અમ કેરા અપરાધ જો,
કરશો માફ અમેતો અવગુણથી ભર્યારે લોલ.

હો સદ ગુરૂવરજી, અમને કરશો યાદ જો,
જો જાઓ આઘા કરતા વિહારનેરે લોલ. ૨૮

હો સદ ગુરૂવરજી, અમ જેવા તો અનેક જો,
તમને પગલે પગલે જાતા પૂજશેરે લોલ.

હો સદ ગુરૂવરજી. પણ અમને તમે એક જો,
પણ અમને તમે દીલથી કદી ન વિસારશોરે લોલ ૨૯

હો સદ ગુરૂવરજી દર્શન તો ફરી વાર જો,
દેશો વેલા દીલમાં કરૂણા લાવીનેરે લોલ.

હો સદ ગુરૂવરજી, લ્યો વંદણા અવધાર જો,
ચંપકલાલ કહે કરજોડી આપનેરે લોલ. ૩૦



